Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 06, (नवंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 13–15

कृषि में हरित क्रांति का महत्व

ललित नारायण सोनू, डॉ. संपूर्णा नन्द सिंह, मिदहत शेख, शेजा सिद्दीकी एवं सलोनी कुमारी

कृषि विभाग,
आई. ए. एस. टी. इंटीग्रल विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – lalitnarayansonu133@gmail.com

भूमिका

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर करती है। स्वतंत्रता के बाद भारत को सबसे बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा कृ खाद्यान्न की कमी। 1947 से 1965 तक देश में खाद्य संकट, सूखा और जनसंख्या वृद्धि ने कृषि व्यवस्था को कमजोर कर दिया था।

उस समय भारत को अपने नागरिकों का पेट भरने के लिए अमेरिका और अन्य देशों से PL–480 योजना के अंतर्गत गेहूँ आयात करना पड़ता था। ऐसे में कृषि को आत्मनिर्भर और उत्पादक बनाने के लिए वैज्ञानिक दृ ष्टिकोण अपनाया गया, जिसके परिणामस्वरूप 1966–67 में "हरित क्रांति (Green Revolution)" की शुरुआत हुई।

हरित क्रांति की परिभाषा

हरित क्रांति एक वैज्ञानिक कृषि आंदोलन है जिसके तहत उच्च उत्पादकता वाली फसलों की किस्में (High Yielding Varieties – HYV), रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, सिंचाई, यंत्रीकरण और आधुनिक तकनीकों के उपयोग से कृषि उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि की गई।

सरल शब्दों में:

"हरित क्रांति वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से वैज्ञानिक तरीकों, नई किस्मों, सिंचाई और उर्वरकों के प्रयोग से कृषि उत्पादन में तीव्र वृद्धि की गई।"

हरित क्रांति के जनक

विश्व स्तर पर: डॉ. नॉर्मन ई. बोरलॉग (Dr- Norman E- Borlaug) – जिन्होंने मैक्सिको में उच्च उत्पादक गेहूँ की किस्म विकसित की।

भारत में: डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन (Dr- M- S- Swaminathan) – जिन्होंने भारत में इस तकनीक को लागू किया और इसे सफल बनाया।

हरित क्रांति के मुख्य उद्देश्य

1. देश को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाना।

2. कृषि उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि करना।
3. किसानों की आय और जीवन स्तर में सुधार लाना।
4. आयात पर निर्भरता घटाकर निर्यात को प्रोत्साहन देना।
5. कृषि में वैज्ञानिक और आधुनिक तकनीक का प्रसार करना।

हरित क्रांति के प्रमुख घटक

1. **उच्च उत्पादक किस्में (HYV Seeds)** : गेहूँ, धान, मक्का आदि फसलों की उन्नत प्रजातियों का विकास हुआ।
   जैसे — गेहूँ की किस्में "सोनालिका", "कांतिमान", "लर्मा रोजा", और धान की "IR–8", "Jay", "Padma"।
2. **रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग** : फसलों को आवश्यक पोषक तत्व (N, P, K) देने के लिए रासायनिक खादों का प्रयोग बढ़ा। इससे फसलों की पैदावार में 2 से 3 गुना तक वृद्धि हुई।
3. **सिंचाई व्यवस्था का विकास** : नहरों, ट्यूबवेलों, पंपसेटों और बोरवेलों से सिंचाई क्षेत्र का विस्तार हुआ। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में भूजल सिंचाई का अधिक उपयोग हुआ।
4. **कीटनाशक और खरपतवारनाशक का उपयोग** : फसलों को रोग, कीट और खरपतवार से बचाने के लिए रासायनिक दवाओं का उपयोग किया गया।
5. **कृषि यंत्रीकरण (Mechanization)** : ट्रैक्टर, थ्रेशर, हार्वेस्टर, पावर टिलर जैसे उपकरणों से कृषि कार्यों में गति आई और श्रम लागत कम हुई।
6. **कृषि ऋण और सहायक सेवाएँ** : किसानों को बैंक और सहकारी समितियों से सस्ता ऋण उपलब्ध कराया गया। भंडारण, विपणन और परिवहन की सुविधाओं में सुधार हुआ।

हरित क्रांति के परिणाम

1. **खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि** : 1960 के दशक में जहाँ भारत में खाद्यान्न उत्पादन लगभग 82 मिलियन टन था, वहीं आज यह बढ़कर 300 मिलियन टन से अधिक हो गया है। गेहूँ और धान के उत्पादन में सबसे अधिक वृद्धि हुई।
2. **आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई** : भारत ने विदेशी अनाज पर निर्भरता समाप्त की और आज खाद्यान्न निर्यातक देश बन चुका है।
3. **किसानों की आय में वृद्धि** : आधुनिक तकनीक से उत्पादन बढ़ने के कारण किसानों की आय और जीवन स्तर दोनों में सुधार हुआ।
4. **ग्रामीण विकास में योगदान** : सिंचाई, बिजली, सड़कों और बाजार जैसी सुविधाएँ बढ़ीं जिससे गाँवों में आर्थिक विकास हुआ।
5. **औद्योगिक विकास को बल मिला** : खाद, ट्रैक्टर, बीज, दवा उद्योगों की मांग बढ़ी जिससे औद्योगिक विकास को गति मिली।
6. **रोजगार के अवसर** : कृषि से जुड़ी अनेक सहायक गतिविधियाँ जैसे बीज उत्पादन, खाद वितरण, विपणन आदि में रोजगार बढ़ा।

हरित क्रांति की सीमाएँ

1. **क्षेत्रीय असमानता** : यह क्रांति मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश तक सीमित रही।
2. **फसल असंतुलन :** गेहूँ और धान पर अधिक ध्यान देने से दालों, तिलहनों और मोटे अनाजों का उत्पादन घटा।
3. **पर्यावरणीय प्रभाव** : रासायनिक खादों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हुई और जल प्रदूषण बढ़ा।
4. **भूजल दोहन** : अत्यधिक सिंचाई से भूजल स्तर लगातार नीचे गया, विशेषकर पंजाब और हरियाणा में।
5. **लघु किसानों की उपेक्षा** : महंगे बीज, खाद और मशीनरी का उपयोग छोटे किसानों के लिए कठिन था।
6. **मिट्टी का क्षरण और पोषण असंतुलन :** केवल रासायनिक खादों पर निर्भरता से मिट्टी की संरचना और सूक्ष्म पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ा।

हरित क्रांति का सामाजिक एवं आर्थिक महत्व

1. **भूख और अकाल से मुक्ति :** खाद्यान्न की उपलब्धता बढ़ने से देश में भूखमरी की घटनाएँ लगभग समाप्त हो गईं।
2. **कृषि में तकनीकी जागरूकता :** किसानों ने नई तकनीकें, उन्नत किस्में और वैज्ञानिक तरीके अपनाने शुरू किए।
3. **ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार :** कृषि आय से ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग और निवेश बढ़ा।
4. महिलाओं की भागीदारी : हरित क्रांति के बाद कृषि में महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ी, विशेष रूप से प्रसंस्करण और विपणन में।
5. **राष्ट्रीय आय में योगदान :** कृषि उत्पादन बढ़ने से GDP में कृषि का योगदान बढ़ा और देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई।

हरित क्रांति से मिली सीख

1. केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं, सतत् कृषि अपनाना जरूरी है।
2. फसलों का विविधीकरण (Crop Diversification) अपनाना चाहिए।
3. जैविक खेती, एकीकृत पोषक प्रबंधन (INM) और एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) का प्रयोग आवश्यक है।
4. जल संरक्षण और मृदा संरक्षण पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

निष्कर्ष

हरित क्रांति ने भारतीय कृषि को नई दिशा दी। इसने देश को "भूखमरी से आत्मनिर्भरता" तक पहुँचाया। किसानों की स्थिति में सुधार हुआ, उत्पादन बढ़ा और अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली। परंतु अब आवश्यकता है कि हम "द्वितीय हरित क्रांति (Second Green Revolution)" की ओर बढ़ें — जिसमें सतत् विकास, पर्यावरण संरक्षण, फसल विविधता और जैविक तकनीकें अपनाई जाएँ ताकि कृषि का विकास आने वाली पीढ़ियों के लिए भी टिकाऊ बना रहे।